'शराबबंदी' यात्रा का बावल में स्वागत

बावल, 2 दिसम्बर। भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में हरियाणा प्रांतीय शराबबंदी अभियान के अन्तर्गत की जा रही तूफानी यात्रा के बावल के कटला बाजार में पहुँचने पर यहाँ के लोगों ने इसका भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश के नेतृत्व में एक सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नौजवान शराब की ओर अधिक अग्रसर होता जा रहा है तथा शराब के ठेकों पर नौजवानों की लम्बी कतारें लगी रहती हैं। उन्होंने कहा कि हरियाणा में इतना बुरा हाल है कि शिक्षण संस्थाओं में भी ऐसे छात्रों की उपस्थिति देखी जा सकती है।

स्वामी जी ने कहा कि इन नौजवानों को लाभ व हानि का बिलकुल भी अंदाजा नहीं है कि जवानी कब आयी और कब चली गयी। वे इस नशे की बीमारी से ग्रस्त हो जाते हैं, जो बुढ़ापे तक पीछा नहीं छोड़ती।

स्वामी जी ने सरकार पर तीखे प्रहार करते हुए कहा कि हरियाणा राज्य का गठन एक नवम्बर 1966 को किया गया था, उस समय हरियाणा में केवल तीन ही शराब के कारखाने लगे हुए थे। आज 1992 में जब भजनलाल की सरकार रजत जयंती का जश्न मना रही है तो हरियाणा में लगभग 21 कारखानों का जाल फैला हुआ है।

उन्होंने कहा कि इन सबका असर हरियाणा के जनजीवन पर पड़ रहा है। यह घोर चिन्ता-जनक विषय है। उन्होंने कहा कि पहले जहां 'देशों में देश हरियाणा जहां दूध-दही का खाणा' होता था लेकिन आज वहां 'शराब पीणा और पिलाणा' रह गया है। बच्चे के मूंह की रोटी छीनकर शराब के नशे में धुत हरियाणा का किसान और मजदूर आज सुख-शांति खो रहा है।

उन्होंने कहा कि सरकार कहती है कि शराब बंद करने से सरकार को करोड़ों के राजस्व का घाटा होगा। उन्होंने तीखे स्वर में कहा ऐसी सरकार को हम जस्टिस टेकचन्द कमीशन की रिपोर्ट का हवाला देकर बताना चाहेंगे कि सरकार लोगों को शराब पिलाकर जितना राजस्व वसूलती है, उसका कई गुना उसे इसमें खर्च करना पड़ता है।

उन्होंने कहा कि मणिपुर, नागालैण्ड व गुजरात प्रांत में शुरू से शराबबंदी है, मगर वहां की सरकारें भूखी नंगी नहीं हैं। वो इस हरियाणा राज्य से भी बेहतर हैं। क्या उनका राजस्व नहीं चल रहा? क्या वे पूरी तरह बर्बाद हो गये?

उन्होंने बताया अभी हाल में ही तमिलनाडु में जयललिता सरकार ने देशी शराब के ठेके बंद करा दिये हैं, जिससे उनकी सरकार को किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न नहीं हुई।

लेकिन आज हरियाणा का भविष्य अंधकार में लिप्त होता जा रहा है। यदि राज्य सरकार शराब पर पाबंदी लगा दे तो क्या सरकार नहीं चलेगी? क्या चोरी, लूट-खसोट, बलात्कार कम नहीं होंगे। ●

7 दिसम्बर 1992 को जनसत्ता लिखता है-